

(8) भारतीय राज्य सिद्धांत आधारित दूरी है।
 (9) सिद्धांत का पालन करता है, जो कुछ
 पश्चिमी लोकतंत्रों में देखी जाने वाली पूर्ण
 अलग-अलग नीति से भिन्न है। अल्पसंख्यक
अधिकारी, धार्मिक स्वतंत्रता, धार्मिक संस्थानों के
 राज्य से दूरतत्त्व जैसी लोक नीतियों से
 यह मॉडल इस प्रकार प्रभावित करता है?
 विश्लेषण करें।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना भारत को
 एक पंचनिरपेक्ष राज्य घोषित करती है।
 भारत की पंचनिरपेक्षता अपने स्वरूप एवं
 प्रकृति में पश्चिमी पंचनिरपेक्षता से भिन्न है।

पश्चिमी पंचनिरपेक्षता राज्य
 और धर्म से वीच पूर्ण अलग-अलग की
 बात करता है। इसका मूल कारण है -

(i) पश्चिमी राष्ट्र राज्य :- पश्चिम के
 आधुनिक राष्ट्रों का निर्माण अपना
संस्कृति और भाषा के आधार पर हुआ
 है। जैसे जर्मनी, फ्रांस इत्यादि।

(ii) ऐतिहासिक परिदृश्य :- मध्यकालीन
 यूरोप में सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था
 एवं सापेक्षवाद के कारण धर्म,

भारतीय समाज के प्रत्येक क्षेत्र में
अल्पतः ही प्रभावशाली था। रीसों के
पुनर्जागरण और प्रबोधन ने राज्य
और धर्म के बीच पूर्ण अलगाव की
आधारशीलता रखी।

लेकिन, भारतीय धर्मनिरपेक्षता
राज्य और धर्म के बीच पूर्ण अलगाव के
बहुल राज्य और धर्म के बीच 'तदस्थता'
अर्थात् 'सिद्धांत आधारित' दूरी' के
सिद्धांत का पालन करता है क्योंकि -

(i) भारतीय समाज :-

भारतीय समाज बहुसांस्कृतिक,
बहुभाषी और अन्तः सामाजिक
एवं अन्तः-सामाजिक विविधताओं से
पूर्ण है।

अतः सामाजिक सौहार्द,
राष्ट्र की एकता-अखंडता और
बंधुता बनाए रखने के लिए
राज्य का समीक्षात्मक दृष्टिकोण
आवश्यक हो जाता है।

(ii) सायासिक-सांस्कृतिक इतिहास :-

भारत में धर्म-समाज-सांस्कृतिक
इस प्रकार जुड़े हुए हैं कि उन्हें
अलग-अलग उदरे देना मुश्किल है।
साथ ही, भारत में धर्म इसी भी
प्रकार की तरह प्रभावशाली नहीं रहा।
बल्कि धार्मिक मौखिक और शिक्का
वनी ही।

इस प्रकार भारतीय पंचनिर्घात
भारतीय परिस्थितियों के अलग-अलग रूप
सूड-जेनेरल अर्थात् रूप में अनुभव है।

अपनी विरुद्धशील प्रकृति के
कारण यह भारतीय समाज के अलग-अलग
कोई रूप भीतर पर भिन्न-भिन्न
प्रभाव डालता है —

पंचनिर्घात रूप अल्पसंख्यक अधिकार

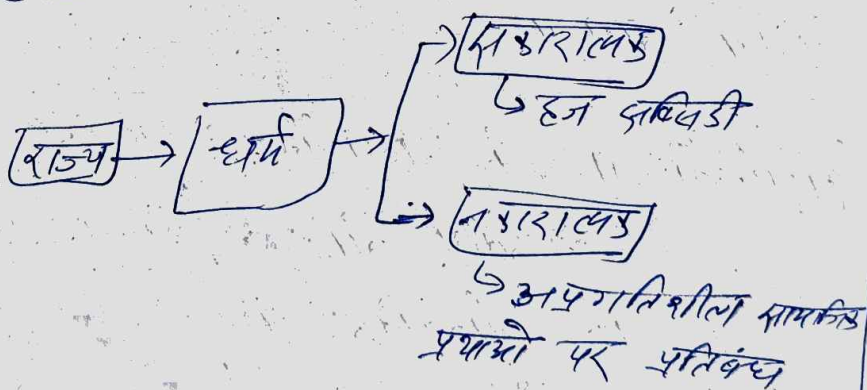
भारतीय संविधान, अल्पसंख्यकों
के भाषाई-सांस्कृतिक-धार्मिक अधिकारों
की रक्षा के लिए मौखिक अधिकारों
के अन्तर्गत विशेष प्रावधान दिया
गया है।

संविधान निर्माताओं ने भारतीय
राज्य का स्वरूप एवं प्रकृति को
प्रकार निश्चित किया है कि यह
बहुसंख्यक की लानाशाही है ~~निकाह~~
विकट अल्पसंख्यकों के अधिकारों की
रक्षा करता है।

धार्मिक स्वतंत्रता और पंचनिरपेक्षता

धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा हेतु
मौखिक अधिकारों के अन्तर्गत, अनुच्छेद
- 25-28 तक विशेष प्रावधान हैं। यह है
की अपने धर्म की मानने एवं आराधना
करने की पूर्ण स्वतंत्रता है।

लेकिन भारतीय पंचनिरपेक्षता
में राज्य की हर प्रकार से प्रभावित होती
है -



पंचनिरपेक्षता और धार्मिक संस्थानों में स्वतंत्रता

राज्य सभी धर्मों से समान सम्मान देता है। धार्मिक संस्थानों से अपने धर्म का आचरण, करने की स्वतंत्रता है।

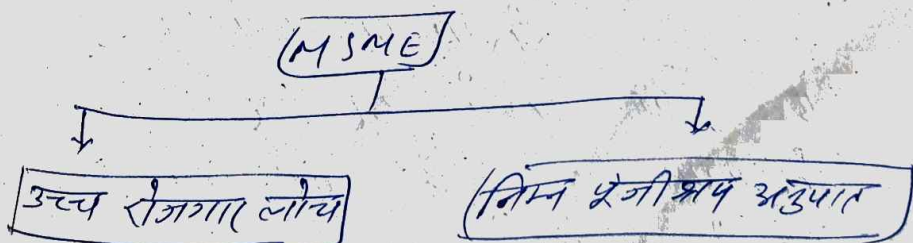
लेडिन कहे ^{सर्व धार्मिक} धर्मों में एक ^{सर्व धार्मिक} धर्म करना होता है।
राज्य 'समान सुखा' ^{सर्व धार्मिक} देता है। इन संस्थानों में स्वतंत्रता बढ़ जाती है।

इस प्रकार, भारतीय राज्य की 'सिद्धान्त आधारित दूरी' की अवधारणा भारतीय पंचनिरपेक्षता से जीवंत एवं सत्य-सापेक्ष बनता है।

(8) MSME क्षेत्र को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है, फिर भी इसकी दृष्टि कई चुनौतियों से घिरा सीमित है। भारत में MSME द्वारा संचालित की जाने वाली प्रमुख कारखानों पर चर्चा करते हुए इन समस्याओं को हल करने के लिए हमें राष्ट्रीय प्रावधानों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना

MSME क्षेत्र को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है क्योंकि यह कुल उत्पादन का 36%, कुल निर्यात का 45% तथा रोजगार में 30% से अधिक का योगदान देता है। फिर भी यह क्षेत्र कई चुनौतियों से जूझ रहा है जिससे समाधान का प्रयास बजट 2025-26 में डिफा गया है।

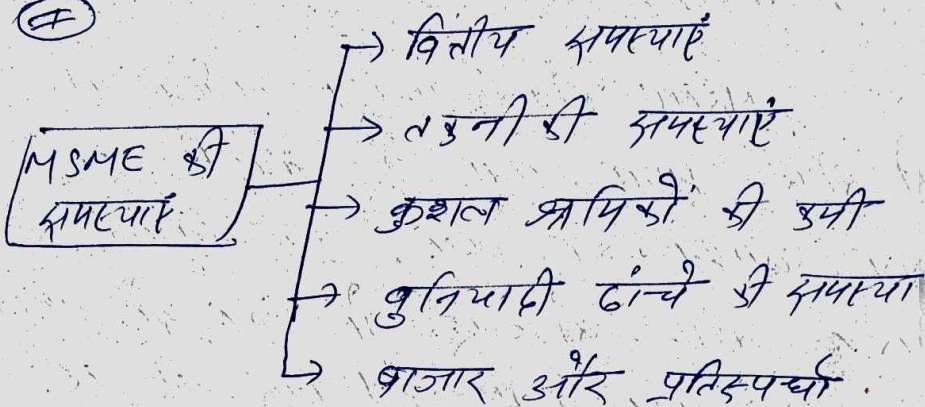
इस क्षेत्र का महत्व भारत जैसे विकासशील और जनसांख्यिकी लाभार्थी वाले देश में और भी इसलिए ज्यादा है क्योंकि वस्तु —



अर्थात् इसमें अधिक समय और अधिक लागत होती है और आप प्रधान क्षेत्र हैं, न कि प्रौद्योगिकी प्रधान।

भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखने के बाद भी यह क्षेत्र कई बाधाओं का सामना कर रहा है जो निम्नलिखित हैं -

(4)



(1) वित्तीय समस्याएं :-

भारत में 6.3 करोड़ से अधिक MSME हैं, इनमें से 70% से अधिक को संस्थागत ऋण प्राप्त नहीं होता है (RBI की 2021 की रिपोर्ट के अनुसार)।

संस्थागत ऋण नहीं मिलने के कारण महंगी ऋण पर गैर संस्थागत क्षेत्र से ऋण लेना पड़ता है। जिससे अत्यंत उत्पादन लागत बढ़ जाती है जिससे वे उद्योग प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाते हैं।

(2) तड़नीडी समस्या :-

पारंपरिक उत्पादन तड़नीड भारतीय
मसाले की प्रमुख बाधा है। बांध
सब नवाचार की उमी है उद्योग
में क्षेत्र नवीन तड़नीड की पहुंच
से दूर रह जाते हैं।

इस कारण से उद्योग
प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाते हैं।

(3) कुशल संपिंडों की उमी:

भारत जनसंख्या की लगभग आधा
देश है। लेकिन यह लगभग आधे
वृद्धि में संलग्न नहीं हो पा रहा
है क्योंकि इनमें बाजार की मांग
से अनुकूल कुशलता की उमी है।

कुशल बिराल सब उद्योगों या
राष्ट्रीयता की दिवोट से अनुकूल भारत में
कुल उत्पादन का कुल 4.7% की औपचारिक
प्राधिकरण रह पाया है जबकि जापान में
80%, तथा दक्षिण कोरिया में 96% है।

(4) मुनियामी ढाँचे की समस्या:

भारत में MSME क्षेत्र मुख्यतः
भंडारण, परिवहन, डिजिटल अक्लेंडरचना
इत्यादि की कमी से जूझ रहा है।
अपर्याप्त अक्लेंडरचना के कारण
भारतीय MSME क्षेत्र उत्पादन, गुणवत्ता
सब प्रतिस्पर्धी में पिछड़ रहा है।

(5) बजार और प्रतिस्पर्धी:

लॉजिस्टिक्स सपोर्ट और
वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला लड़ चुके
की कमी से अभाव में भारतीय
MSME क्षेत्र वैश्विक प्रतिस्पर्धी में
पिछड़ रहा है।

इन समस्याओं के समाधान
के लिए बजार 2025-26 में प्रभाव डिजा
गया है जो निम्नलिखित है —

MSME सुधार के लिए वजारीय प्रावधान

- ① परिभाषा में परिवर्तन
- ② 500 करोड़ का क्रेडिट गारंटी फंड
- ③ MSME क्रेडिट राई
- ④ 10,000 करोड़ का निधिओं का बैंक
- ⑤ आप गलत होय से बढावा

- ① परिभाषा नई परिभाषा में निवेश तथा वार्षिक धरोकर की विधीय सीमा 2.5 करोड़ बना दिया गया है।

नई परिभाषा के अनुसार

प्रकार	निवेश (रु.)	तर्जनीय (रु.)
सूक्ष्म उद्यम	2.5	125
लघु उद्यम	25	125
प्रथम उद्यम	125	625

इससे अधिक उद्यमों को MSME की मिलने वाली सुविधाएँ मिलेंगी लेकिन इससे बड़े-प्रथम उद्यमों द्वारा अधिक लाभ उठाने का सत्ता बना रहेगा वही लघु एवं सूक्ष्म उद्यम पिछड़े रहते हैं।

- (2) 5000 करोड़ का क्रेडिट गारंटी फंड :-

इसके बीजकल मुक्त रकम प्राप्त होगा। लेकिन अनुनाल उद्यमों को रकम देने में बैंक-निष्पादित संपत्तियों (NPA) में रुझान है जारी है।

- (3) MSME डेडिड बैंड एवं 10,000 करोड़ का निधि का संकेत :-

इससे MSME उद्यमों को सहायता प्राप्त हो सकेगा। लेकिन इसका डिमान्ड बहुत बड़ा है न ही यह फरिय प्राप्तमान

साथ ही जाएगा।

④ आप गहन ध्यान की कला :-

खाद्य प्रसंस्करण - यमरा एवं जूता उद्योग
रिक्लीना उद्योग की कला दिया जाना
की वजह से प्रसिद्ध है।

लेडिन इलेक्ट्रिक अक्सेसरीज
की इकाई, शीट एवं नकाशा की
अभाव इच्छा

इस प्रकार, MSME क्षेत्र
अपनी चुनौतियों के बावजूद भारतीय
अर्थव्यवस्था के विकास के दूसरा इंजन
के रूप में राफ़ उठ रहा है और
अपने प्रति और विश्व की संभावनाएं
बता रहा है।